श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन (SKPF) एवं WINCOMPETE- संयुक्त टेस्ट सीरीज - 2026

टेस्ट 07 - आधुनिक भारत (19वीं सदी)

आंसर की (Answer Key)

आंसर की (Answer Key)

प्रश्न संख्या	सही विकल्प	प्रश्न संख्या	सही विकल्प
1	A	11	C
2	A	12	B
3	A	13	B
4	C	14	A
5	A	15	B
6	B	16	A
7	C	17	B
8	A	18	A

wincompete

9	B	19	C
10	C	20	B

आंसर की (Answer Key)

21. C
22. B
23. B
24. B
25. C
26. A
27. B
28. A
29. C
30. A
31. C
32. A
33. A
34. C
35. D
36. A
37. B
38. C
39. A
40. B

wincompete

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
41	D
42	B

43	A
44	C
45	B
46	A
47	C
48	D
49	C
50	A
51	B
52	D
53	A
54	B
55	A
56	A

wincompete

57	D
58	C
59	D
60	C

प्रश्न संख्या	सही विकल्प
61	D
62	D
63	A
64	B
65	C
66	A
67	B
68	D

wincompete

69	C
70	A
71	B
72	A
73	D
74	B
75	A
76	A
77	D
78	C
79	A
80	D

wincompete

प्रश्न संख्या	सही विकल्प

81	A
82	B
83	C
84	D
85	B
86	C
87	A
88	D
89	B
90	A
91	C
92	B
93	D
94	C

wincompete

95	A
96	B
97	D
98	C
99	A
100	B

व्याख्या सहित उत्तर (Detailed Explanations)

प्रश्न 1: धन के निष्कासन (Drain of Wealth) के संदर्भ में विचार कीजिये...

सही उत्तर: A

व्याख्या: दादाभाई नौरोजी ने 1867 में 'पवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में यह प्रतिपादित किया कि भारत का धन एकतरफा इंग्लैंड जा रहा है। इसमें होम चार्जेज (इंग्लैंड में स्थित भारतीय अधिकारियों के वेतन, पेंशन आदि) और विदेशी ऋण का ब्याज शामिल था। तीसरा कथन असत्य है क्योंकि ब्रिटिश सरकार और 'वेलबी आयोग' ने इसे कभी आधिकारिक रूप से स्वीकार नहीं किया, बल्कि राष्ट्रवादियों के दबाव में 1896 के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने इसे औपचारिक रूप से अपनाया था। यह निष्कासन भारत के विकास को रोक रहा था।

wincompete

प्रश्न 2: वि-औद्योगिकीकरण के लिए उत्तरदायी कारक नहीं था...

सही उत्तर: A

व्याख्या: वि-औद्योगिकीकरण का अर्थ है भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों का पतन। ब्रिटिश सरकार ने कभी भी भारतीय दस्तकारों को संरक्षण नहीं दिया, बल्कि 1813 के बाद 'एकतरफा मुक्त व्यापार' द्वारा भारतीय बाजारों को मशीन निर्मित सस्ते ब्रिटिश माल से भर दिया। देशी रियासतों के पतन ने उन दरबारों को समाप्त कर दिया जो विलासितापूर्ण हस्तशिल्प वस्तुओं के मुख्य खरीदार थे। रेलवे ने इस ब्रिटिश माल को गाँवों तक पहुँचाकर

स्थानीय बुनकरों और कारीगरों की कमर तोड़ दी, जिससे भारत एक कृषि प्रधान निर्यातक देश बनकर रह गया।

प्रश्न 3: औपनिवेशिक पूरक अर्थव्यवस्था और व्यापार नीति...

सही उत्तर: A

व्याख्या: औद्योगिक क्रांति के बाद इंग्लैंड को कच्चे माल की आपूर्ति और तैयार माल की खपत के लिए एक विशाल बाजार की आवश्यकता थी। 1813 के चार्टर एक्ट ने कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर मुक्त व्यापार शुरू किया। ब्रिटिश सूती वस्त्रों पर भारत में आयात शुल्क केवल 2-5% था, जबकि भारतीय हस्तशिल्प पर इंग्लैंड में 70-80% तक निर्यात शुल्क लगाया गया। इस भेदभावपूर्ण नीति ने भारतीय उद्योगों को प्रतिस्पर्द्धा से बाहर कर दिया और भारतीय अर्थव्यवस्था ब्रिटिश हितों की पूरक बन गई।

प्रश्न 4: आर्थिक चेतना के संदर्भ में असंगत विकल्प...

सही उत्तर: C

व्याख्या: सर सैयद अहमद खान ने कभी भी धन के निष्कासन सिद्धांत का समर्थन नहीं किया; वे ब्रिटिश शासन के प्रति वफादारी की नीति पर चलते थे। इसके विपरीत, दादाभाई नौरोजी ने 'वांट्स एंड मीन्स ऑफ इंडिया' (1870) और 'ऑन द कॉमर्स ऑफ इंडिया' (1871) जैसे लेख लिखे। आर.सी. दत्त ने 'इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में भारत के विनाशकारी आर्थिक इतिहास का दस्तावेजीकरण किया। एम.जी. रानाडे ने भारतीय पूंजीवाद के विकास की वकालत की। इन नेताओं ने मिलकर भारत की दरिद्रता के वास्तविक कारणों को उजागर किया।

प्रश्न 5: भू-राजस्व व्यवस्था का सुमेलन...

सही उत्तर: A

व्याख्या: लॉर्ड कॉर्नवालिस ने 1793 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा में 'स्थायी बंदोबस्त' लागू किया। थॉमस मुनरो और कैप्टन रीड ने दक्षिण भारत (मद्रास और बॉम्बे) में 'रैयतवाड़ी व्यवस्था' शुरू की जहाँ किसान सीधे सरकार को लगान देते थे। होल्ट मैकेंजी ने 1822 में उत्तर भारत (पंजाब, अवध) में 'महालवाड़ी व्यवस्था' प्रस्तावित की, जहाँ भू-राजस्व का निर्धारण व्यक्तिगत किसान के बजाय पूरे 'महाल' (ग्राम समुदाय) के साथ किया जाता था। यह व्यवस्थाएं ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों और कर संग्रहण को अधिकतम करने हेतु बनाई गई थीं।

प्रश्न 6: रैयतवाड़ी व्यवस्था और उसके निष्कर्ष...

सही उत्तर: B

व्याख्या: रैयतवाड़ी व्यवस्था में बिचौलियों (जमींदारों) को हटाया गया था, लेकिन साहूकारों का प्रभाव समाप्त नहीं हुआ। अत्यधिक भू-राजस्व (अक्सर उपज का 50-60%) के कारण किसान ऋण के जाल में फँस गए और उनकी भूमि साहूकारों के पास चली गई। निष्कर्ष 2 सत्य है क्योंकि स्थायी बंदोबस्त के विपरीत, रैयतवाड़ी में राजस्व का निर्धारण स्थायी नहीं था; इसे 20-30 वर्षों के अंतराल पर बढ़ाया जा सकता था। इसने किसानों को सीधे राज्य के दमनकारी तंत्र के संपर्क में ला दिया, जिससे उनका शोषण और बढ़ गया।

प्रश्न 7: महालवाड़ी भू-राजस्व व्यवस्था में असंगत कथन...

सही उत्तर: C

व्याख्या: महालवाड़ी व्यवस्था में किसान को अपनी भूमि बेचने या हस्तांतरित करने का कानूनी अधिकार प्राप्त था, बशर्ते वह राजस्व का भुगतान कर रहा हो। कथन C असत्य है। यह व्यवस्था भारत के कुल ब्रिटिश क्षेत्र के

लगभग 30% भाग पर लागू थी। इसमें ग्राम प्रधान (लंबरदार) राजस्व वसूली का उत्तरदायित्व संभालता था। मार्टिन बर्ड ने उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में भू-अभिलेखों के माध्यम से इस व्यवस्था को व्यवस्थित किया, इसलिए उन्हें इस क्षेत्र में भू-राजस्व सुधारों का अग्रदूत माना जाता है।

प्रश्न 8: स्थायी बंदोबस्त के व्यावहारिक परिणाम...

सही उत्तर: A

व्याख्या: स्थायी बंदोबस्त में 'सूर्यास्त नियम' अत्यंत कठोर था; यदि निश्चित तिथि के सूर्यास्त तक राजस्व जमा नहीं होता, तो जमींदारी छिन ली जाती थी। कथन 3 असत्य है क्योंकि जमींदारों को कंपनी को एक निश्चित राशि देनी होती थी, और बाकी अतिरिक्त लाभ उनका स्वयं का होता था। इसके बावजूद, अधिकांश जमींदार 'अनुपस्थित जमींदार' बन गए और उन्होंने कृषि विकास में कोई निवेश नहीं किया। उन्होंने केवल कृषकों से लगान वसूली पर ध्यान दिया, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था जर्जर हो गई और किसानों का शोषण चरम पर पहुँच गया।

प्रश्न 9: 'कॉर्नवालिस कोड' का मुख्य उद्देश्य...

सही उत्तर: B

व्याख्या: लॉर्ड कॉर्नवालिस को 'भारत में सिविल सेवा का जनक' कहा जाता है। उन्होंने प्रशासन को भ्रष्टाचार मुक्त करने हेतु 1793 में 'कॉर्नवालिस कोड' लागू किया। यह शक्तियों के पृथक्करण पर आधारित था, जिसमें कलेक्टर से न्यायिक शक्तियाँ छीन ली गईं और उसे केवल राजस्व संग्रह तक सीमित कर दिया गया। न्याय के लिए 'दीवानी अदालतों' को सुदृढ़ किया गया। कॉर्नवालिस ने सेवाओं का पूर्ण 'यूरोपीयकरण' किया और भारतीयों को उच्च पदों से बाहर कर दिया, क्योंकि उनका मानना था कि प्रत्येक हिंदू भ्रष्ट है।

प्रश्न 10: सिविल सेवा आयु और लिटन की नीति...

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन A सत्य है, लेकिन कारण R पूरी तरह असत्य है। लॉर्ड लिटन एक साम्राज्यवादी शासक थे। उन्होंने आयु सीमा 21 से घटाकर 19 वर्ष इसलिए की थी ताकि भारतीय युवा इस कठिन परीक्षा की तैयारी न कर सकें और सेवाओं में प्रवेश न पा सकें। भारतीयों के प्रवेश को रोकने हेतु परीक्षा केवल लंदन में आयोजित की जाती थी। यह नीति राष्ट्रवादी आक्रोश का मुख्य कारण बनी, जिसके विरुद्ध सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने 'इंडियन एसोसिएशन' के माध्यम से भारत व्यापी आंदोलन चलाया जिसे 'सिविल सर्विस आंदोलन' कहा जाता है।

प्रश्न 11: पुलिस और सेना के संदर्भ में असंगत कथन...

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन C असंगत है। 1857 के विद्रोह के बाद नियुक्त 'पील कमीशन' ने सिफारिश की थी कि सेना में 'यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ाई जाए' और भारतीयों का अनुपात घटाया जाए (बंगाल में 1:2 और अन्य जगह 1:3)। पुलिस के संबंध में कॉर्नवालिस ने थानों की व्यवस्था की और दरोगा पद सृजित किया। सेना में 'फूट डालो और राज करो' के तहत रेजिमेंटों का गठन जाति और क्षेत्र के आधार पर किया गया ताकि उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित न हो सके और वे वफादार रहें।

प्रश्न 12: बेंटिक के न्यायिक सुधार और उनके उद्देश्य...

सही उत्तर: B

व्याख्या: बेंटिक ने कॉर्नवालिस द्वारा स्थापित प्रांतीय अदालतों को समाप्त किया क्योंकि वे बहुत खर्चीली और धीमी थीं। निष्कर्ष 1 गलत है क्योंकि उनके हटने से न्यायिक प्रक्रिया में तेजी आई और विकेंद्रीकरण हुआ। बेंटिक ने जिला मजिस्ट्रेट और कलेक्टर को फिर से न्यायिक शक्तियाँ प्रदान कीं। उन्होंने फारसी के स्थान पर निचली अदालतों में स्थानीय भाषाओं और उच्च अदालतों में अंग्रेजी के प्रयोग की अनुमति दी। यह सुधार भारतीय नागरिकों की न्यायिक पहुँच को सुगम और किफायती बनाने के उद्देश्य से प्रेरित थे।

प्रश्न 13: कृषि के व्यवसायीकरण का प्रभाव...

सही उत्तर: B

व्याख्या: व्यवसायीकरण से किसानों की स्थिति सुदृढ़ नहीं हुई (कथन 1 गलत), बल्कि वे साहूकारों और बिचौलियों के चंगुल में फँस गए। किसानों को नकदी फसलें (जैसे नील) उगाने के लिए मजबूर किया जाता था। व्यवसायीकरण ने खाद्य फसलों (गेहूँ, चावल) के क्षेत्र को कम कर दिया, जिससे अकाल के समय खाद्य संकट गहरा गया। नकदी फसलें उगाने के लिए लिए गए 'ददनी' (अग्रिम ऋण) ने किसानों को स्थायी दास बना दिया। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मंदी (जैसे अमेरिकी गृहयुद्ध के बाद कपास मंदी) ने भारतीय किसानों को बर्बाद कर दिया।

प्रश्न 14: स्ट्रेची आयोग (1880) का संबंध...

सही उत्तर: A

व्याख्या: 1876-78 के भीषण अकाल के बाद लॉर्ड लिटन ने रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में प्रथम 'अकाल आयोग' गठित किया। इसने सिफारिश की कि अकाल पीड़ितों को सहायता प्रदान करना राज्य का कर्तव्य है। इसने 'अकाल संहिता' (Famine Code) का मसौदा तैयार किया और एक 'अकाल राहत कोष' बनाने का सुझाव दिया। आयोग ने रेलमार्गों के विस्तार पर भी जोर दिया ताकि अनाज को अकाल ग्रस्त क्षेत्रों तक शीघ्र पहुँचाया जा सके। यह आधुनिक भारत में व्यवस्थित अकाल नीति की पहली आधिकारिक शुरुआत थी।

प्रश्न 15: अकाल और आयोगों का सुमेलन...

सही उत्तर: B

व्याख्या: उड़ीसा अकाल (1866) के समय जॉर्ज कैंपबेल आयोग बना। इसे 'अकालों का सागर' (Sea of Calamity) कहा गया क्योंकि इसमें प्रबंधन की भारी विफलता रही। मद्रास अकाल (1876-78) के समय स्ट्रेची आयोग बना। 1896-97 के अकाल के समय जेम्स लायल आयोग गठित हुआ जिसने स्ट्रेची आयोग की सिफारिशों को और परिष्कृत किया। 1900 में लॉर्ड कर्जन के समय एंथोनी मैकडोनल आयोग बना जिसने 'नैतिक प्रभाव' (Moral Persuasion) और सिंचाई विस्तार पर बल दिया। यह क्रम भारत में अकाल नीति के विकास को दर्शाता है।

प्रश्न 16: अकालों का कारण और लेसज़-फेयर नीति...

सही उत्तर: A

व्याख्या: 19वीं सदी के अकालों को 'मानव निर्मित' माना जाता है। अनाज की कुल कमी नहीं थी, बल्कि भारी लगान और गरीबी के कारण लोग अनाज खरीद नहीं सकते थे। कारण R पूर्णतः सत्य है; ब्रिटिश सरकार ने 'एडम स्मिथ' की मुक्त व्यापार नीति का पालन करते हुए अनाज के निर्यात को नहीं रोका, यहाँ तक कि भुखमरी के दौरान भी भारत से भारी मात्रा में गेहूँ इंग्लैंड भेजा गया। प्रशासनिक उदासीनता और सामाजिक सुरक्षा के अभाव ने इन प्राकृतिक आपदाओं को भीषण नरसंहार में बदल दिया।

प्रश्न 17: रेल के विकास के संबंध में सत्य तथ्य...

सही उत्तर: B) राजस्थान में पहली रेल 1874 में आगरा फोर्ट से बांदीकुई (दौसा) के मध्य चली थी।

विकल्प A (असत्य): भारत में पहली यात्री रेल 16 अप्रैल **1853** को चली थी (विकल्प में 1852 दिया गया है जो गलत है)। यह ट्रेन 'ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे' द्वारा मुंबई (बोरी बंदर) से ठाणे के बीच 34 किमी की दूरी के लिए चलाई गई थी।

विकल्प B (सत्य): राजस्थान में रेलवे का विधिवत प्रारंभ **20 अप्रैल 1874** को हुआ। यह पहली रेल रियासती काल में **आगरा फोर्ट से बांदीकुई (दौसा)** के मध्य चलाई गई थी। उस समय जयपुर रियासत में महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय का शासन था।

विकल्प C (असत्य): औपनिवेशिक काल में रेलवे का मुख्य उद्देश्य भारतीय उद्योगों को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि ब्रिटिश निर्मित माल को भारत के आंतरिक बाजारों तक पहुँचाना और भारत से कच्चे माल (कपास, अनाज आदि) को बंदरगाहों तक तेजी से पहुँचाना था।

विकल्प D (असत्य): चूँकि विकल्प A गलत है, इसलिए विकल्प D स्वतः ही खारिज हो जाता है।

प्रश्न 18: रेलवे 'गारंटी प्रणाली' और उसके प्रभाव...

सही उत्तर: A

व्याख्या: रेलवे के निर्माण हेतु निजी ब्रिटिश कंपनियों को आकर्षित करने के लिए सरकार ने 'गारंटी प्रणाली' शुरू की। इसके तहत कंपनियों को निवेश पर 5% सुनिश्चित मुनाफे की गारंटी दी गई। यदि लाभ 5% से कम होता, तो उसकी भरपाई भारतीय करदाताओं के पैसे से की जाती थी। इससे कंपनियों ने फिजूलखर्ची की और रेल बिछाने की लागत अनावश्यक रूप से बढ़ गई। इसे "व्हाइट एलीफेंट" (सफेद हाथी) कहा गया क्योंकि यह भारतीय वित्त पर भारी बोझ था और लाभ का सारा हिस्सा इंग्लैंड चला जाता था।

प्रश्न 19: संचार व्यवस्था (डाक-तार) में असंगत कथन...

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन C असंगत है क्योंकि टेलीग्राफ (तार) सेवा का आरंभिक उपयोग पूर्णतः प्रशासनिक और सैन्य उद्देश्यों के लिए था, न कि आम जनता के लिए। आम जनता के लिए मुख्य सुधार 1854 का 'पोस्ट ऑफिस एक्ट' था। ओ'शौघनेसी के नेतृत्व में पहली टेलीग्राफ लाइन कलकत्ता से आगरा (800 मील) बिछाई गई। 1857 के विद्रोह के समय अंग्रेजों ने स्वीकार किया कि "इस बिजली के तार (टेलीग्राफ) ने हमारा गला घोंट दिया" (विद्रोहियों के संदर्भ में), क्योंकि इसके जरिए अंग्रेज सूचनाएं साझा कर विद्रोह को दबाने में सफल रहे।

प्रश्न 20: डलहौजी के सुधार और उनके निष्कर्ष...

सही उत्तर: B

व्याख्या: डलहौजी को आधुनिक बुनियादी ढांचे का जनक माना जाता है, लेकिन उनका उद्देश्य भारत का विकास करना नहीं था (निष्कर्ष 1 गलत)। रेलवे ने ब्रिटिश माल की पहुँच बढ़ाई, डाक-तार ने प्रशासनिक नियंत्रण सुदृढ़ किया और लोक निर्माण विभाग (PWD) ने सैन्य बैरकों और सड़कों का निर्माण किया। यह सभी सुधार "साम्राज्यवादी उद्देश्यों" की पूर्ति के साधन थे। हालाँकि, अनजाने में इन्होंने भारतीयों को भौगोलिक रूप से जोड़ने और भविष्य के राष्ट्रीय आंदोलन हेतु एक बुनियादी ढांचा प्रदान करने में भी सहायता की।

प्रश्न: 21

wincompete

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन 2 गलत है क्योंकि ब्रिटिश काल में रेल और टेलीग्राफ का विकास सैन्य सुरक्षा और व्यापारिक हितों (ब्रिटिश माल की आंतरिक पहुँच) के लिए किया गया था, न कि राष्ट्रवाद बढ़ाने हेतु। हालांकि, इसने अनजाने में संचार सुगम कर राष्ट्रवाद में मदद की। लॉर्ड लिटन के वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (1878) ने भाषाई समाचार पत्रों का दमन किया, जिससे असंतोष बढ़ा। पाश्चात्य शिक्षा ने शिक्षित भारतीयों को यूरोपीय उदारवाद और राष्ट्रवाद के आधुनिक सिद्धांतों से जोड़ा, जिससे एक वैचारिक आधार तैयार हुआ।

प्रश्न: 22

सही उत्तर: B

व्याख्या: दोनों कथन व्यक्तिगत रूप से सत्य हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता। लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियां (जैसे शस्त्र अधिनियम, प्रेस एक्ट) राष्ट्रवाद की उत्प्रेरक थीं क्योंकि उन्होंने भारतीयों को अपमानित किया। दिल्ली दरबार का आयोजन (1877) उस समय हुआ जब देश अकाल से मर रहा था, जो ब्रिटिश असंवेदनशीलता का प्रतीक था। व्याख्या तब सही होती जब कारण सीधे राष्ट्रवाद के किसी विशिष्ट 'संगठित' होने की प्रक्रिया को जोड़ता। लिटन के कार्यों ने भारतीयों को पहली बार अखिल भारतीय स्तर पर सोचने को विवश किया।

प्रश्न: 23

सही उत्तर: B

व्याख्या: निष्कर्ष 1 असत्य है क्योंकि 'स्वैच्छिक बहिष्कार' का निर्णय बड़े पैमाने पर स्वदेशी आंदोलन (1905) के दौरान लिया गया, न कि केवल निष्कासन सिद्धांत के तुरंत बाद। निष्कर्ष 2 सत्य है क्योंकि दादाभाई नौरोजी के 'ड्रेन थ्योरी' ने यह प्रमाणित किया कि भारत की गरीबी का मूल कारण ब्रिटिश आर्थिक दोहन है। इसने किसानों, दस्तकारों और व्यापारियों को यह समझने में मदद की कि उनकी साझा दरिद्रता का कारण विदेशी शासन है। इसने राजनैतिक आंदोलनों के लिए एक ठोस आर्थिक आधार तैयार किया।

प्रश्न: 24

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B असंगत है क्योंकि 'शस्त्र अधिनियम' (Arms Act, 1878) ने भारतीयों को बिना लाइसेंस हथियार रखने से **प्रतिबंधित** किया था, न कि अधिकार दिया था। यह नस्लीय भेदभाव पर आधारित था क्योंकि अंग्रेजों पर यह लागू नहीं था। इल्बर्ट बिल विवाद ने न्यायिक समानता की मांग को जन्म दिया। सिविल सेवा की आयु कम करना भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से बाहर रखने की चाल थी। सामाजिक सुधारों ने समाज की जड़ता को तोड़कर राष्ट्रवाद हेतु एक जागरूक धरातल तैयार किया।

प्रश्न: 25

सही उत्तर: C

wincompete

व्याख्या: पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना 1870 में एम.जी. रानाडे और जी.वी. जोशी ने की थी। इंडियन एसोसिएशन ऑफ कलकत्ता (1876) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और आनंद मोहन बोस द्वारा स्थापित हुई। मद्रास महाजन सभा (1884) पी. आनंद चार्लू और सुब्रमण्यम अय्यर से संबंधित है। बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन (1885) फिरोजशाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी और के.टी. तैलंग ने बनाई। ये सभी संस्थाएं कांग्रेस की स्थापना से पूर्व क्षेत्रीय स्तर पर राजनैतिक चेतना और प्रशासनिक सुधारों की मांग कर रही थीं।

प्रश्न: 26

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 3 असत्य है क्योंकि दादाभाई नौरोजी ने 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' (1866) की स्थापना **लंदन** में की थी, न कि कलकत्ता में। इसका उद्देश्य ब्रिटिश जनता को भारतीय समस्याओं से अवगत कराना था। लैंडहोल्डर्स सोसाइटी (1838) वास्तव में भारत की पहली राजनैतिक संस्था थी जो जमींदारों के हितों तक सीमित थी। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की 'इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस' (1883) एक अखिल भारतीय प्रयास था, जिसका 1886 के कांग्रेस अधिवेशन में विलय हो गया, जो राष्ट्रीय एकता की दिशा में बड़ा कदम था।

प्रश्न: 27

सही उत्तर: B

व्याख्या: उपर्युक्त विशेषताएं 'इंडियन एसोसिएशन ऑफ कलकत्ता' (1876) की हैं। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और आनंद मोहन बोस ने इसकी नींव रखी थी ताकि 'शिक्षित मध्यम वर्ग' की आकांक्षाओं को मंच दिया जा सके। इसने सिविल सेवा परीक्षा की आयु घटाने के विरोध में 'ऑल इंडिया सिविल सर्विस एजिटेशन' चलाया। यह कांग्रेस से पूर्व की सबसे महत्वपूर्ण संस्था थी जिसने जनता को संगठित करना सिखाया। ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन (1851) मुख्य रूप से कुलीन वर्ग और जमींदारों की संस्था थी, जबकि इंडियन एसोसिएशन अधिक लोकतांत्रिक थी।

प्रश्न: 28

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 2 पूरी तरह गलत है क्योंकि इन क्षेत्रीय संस्थाओं के आपसी समन्वय ने ही कांग्रेस की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया, न कि देरी की। निष्कर्ष 1 सत्य है क्योंकि मद्रास महाजन सभा और बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन ने स्थानीय स्वशासन, करों में कमी और विधायी परिषदों में भारतीयों की भागीदारी जैसे मुद्दों को उठाया। इन संस्थाओं ने क्षेत्रीय स्तर पर कैडर और नेतृत्व तैयार किया, जो 1885 में बॉम्बे में आयोजित प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन (कांग्रेस) का आधार बना।

प्रश्न: 29

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असत्य है क्योंकि सुरेन्द्रनाथ बनर्जी कांग्रेस के **प्रथम अधिवेशन (1885) में शामिल नहीं थे**। वे उसी समय कलकत्ता में अपनी संस्था 'इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस' के दूसरे अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे थे। कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन पुणे में प्रस्तावित था, लेकिन वहां प्लेग/हैजा फैलने के कारण इसे बॉम्बे स्थानांतरित किया गया। गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डब्ल्यू. सी. बनर्जी इसके पहले अध्यक्ष बने और ए.ओ. ह्यूम महासचिव (सचिव) नियुक्त हुए।

***प्रश्न: 30**

सही उत्तर: A

wincompete

व्याख्या: दोनों कथन सत्य हैं और व्याख्या सही है। लाला लाजपत राय ने 'यंग इंडिया' (1916) में सुरक्षा कपाट (Safety Valve) सिद्धांत दिया था। इसके अनुसार, वायसराय डफरिन और ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना इसलिए करवाई ताकि 1857 जैसी क्रांति को रोका जा सके और भारतीयों का गुस्सा संवैधानिक तरीके से बाहर निकल जाए। ह्यूम ने इसे 'असंतोष की सुरक्षा दीवार' माना था। हालांकि आधुनिक इतिहासकार इसे केवल एक सिद्धांत मानते हैं, लेकिन उस समय के राजनैतिक संदर्भ में यह एक प्रभावी धारणा थी।

प्रश्न: 31

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि प्रारंभिक कांग्रेस (उदारवादी चरण) का लक्ष्य 'पूर्ण स्वराज्य' नहीं बल्कि **ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर क्रमिक सुधार** और प्रशासनिक भागीदारी था। पूर्ण स्वराज्य की मांग बहुत बाद में (1929) आई। प्रारंभिक उद्देश्यों में राजनैतिक एकता बढ़ाना, राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना, जनहित के मुद्दों पर सरकार को ज्ञापन देना और परिषदों का विस्तार करना शामिल था। वे ब्रिटिश शासन को उखाड़ने के बजाय उसमें भारतीयों का उचित स्थान सुनिश्चित करने पर केंद्रित थे।

प्रश्न: 32

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 2 गलत है क्योंकि ह्यूम कभी कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं रहे, वे केवल 'महासचिव' थे। निष्कर्ष 1 सत्य है क्योंकि गोपाल कृष्ण गोखले ने 'तड़ित चालक' सिद्धांत दिया था। उनके अनुसार, भारतीय नेताओं ने ह्यूम का उपयोग इसलिए किया क्योंकि यदि वे स्वयं ऐसी संस्था बनाते, तो अंग्रेज उसे तुरंत कुचल देते। एक अंग्रेज (ह्यूम) के नेतृत्व के कारण सरकार ने शुरुआत में कांग्रेस को संदेह की दृष्टि से नहीं देखा। ह्यूम ने भारतीयों को राजनैतिक सुरक्षा और मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्रश्न: 33

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 3 असत्य है क्योंकि उदारवादियों (Moderates) ने कभी भी **हिंसक क्रांतिकारी गतिविधियों** का नेतृत्व नहीं किया। वे पूर्णतः संवैधानिक और शांतिपूर्ण तरीकों (3Ps) में विश्वास रखते थे। उन्होंने आर्थिक राष्ट्रवाद (जैसे धन का निष्कासन सिद्धांत) के माध्यम से ब्रिटिश शासन की आलोचना की। बंगाल विभाजन (1905) के दौरान भी उदारवादी इस आंदोलन को केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे और बहिष्कार को केवल विदेशी कपड़ों तक, जबकि उग्रवादी इसे पूरे भारत में फैलाना चाहते थे।

प्रश्न: 34

सही उत्तर: C

व्याख्या: दादाभाई नौरोजी को 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' (भारत के वयोवृद्ध पुरुष) कहा जाता है। गोपाल कृष्ण गोखले महात्मा गांधी के राजनैतिक गुरु थे। फिरोजशाह मेहता को 'बॉम्बे का शेर' (Lion of Bombay) कहा जाता था, जिन्होंने बॉम्बे क्रॉनिकल का संपादन किया। एम.जी. रानाडे को 'पश्चिम भारत का सुकरात' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने महाराष्ट्र में सामाजिक और राजनैतिक पुनर्जागरण की नींव रखी। ये सभी नेता उदारवादी चरण के प्रमुख स्तंभ थे जिन्होंने कांग्रेस की शुरुआती दिशा तय की।

प्रश्न: 35

सही उत्तर: D

wincompete

व्याख्या: विकल्प D असत्य है क्योंकि उदारवादियों ने कभी 'पूर्ण स्वतंत्रता' की मांग स्वीकार नहीं करवाई। उनकी प्रमुख उपलब्धि 1892 का परिषद अधिनियम था, जिसने भारतीयों को पहली बार बजट पर बहस करने का सीमित अधिकार दिया। उनके दबाव में 1895 में 'वेलबी आयोग' बना जिसने भारतीय खर्चों की जाँच की। उन्होंने प्रशासनिक सेवाओं के भारतीयकरण और सैन्य खर्चों में कटौती की मांग को प्रभावी ढंग से उठाया। उदारवादियों ने भारत में संसदीय लोकतंत्र और राजनैतिक चेतना की आधारशिला रखी।

प्रश्न: 36

सही उत्तर: A

व्याख्या: दोनों कथन सत्य हैं और व्याख्या सही है। तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल (उग्रवादी) का मानना था कि उदारवादियों की प्रार्थना और याचिकाओं की नीति से कुछ हासिल नहीं होगा। तिलक ने कहा था कि "साल में एक बार मेंढक की तरह टर्राने से आजादी नहीं मिलेगी।" उन्होंने उदारवादी पद्धति को 'राजनैतिक भिक्षावृत्ति' कहा क्योंकि उदारवादी ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते थे और केवल संवैधानिक रियायतें मांग रहे थे, जबकि उग्रवादी आत्मनिर्भरता और स्वराज पर जोर दे रहे थे।

प्रश्न: 37

सही उत्तर: B

व्याख्या: उपर्युक्त पैराग्राफ 'बंगाल विभाजन' (1905) की व्याख्या करता है। लॉर्ड कर्जन ने प्रशासनिक सुविधा का बहाना बनाकर बंगाल को विभाजित किया, लेकिन वास्तविक उद्देश्य हिंदू-मुस्लिम एकता को तोड़ना और राष्ट्रवादी केंद्र (बंगाल) को कमजोर करना था। 16 अक्टूबर 1905 को पूरे बंगाल में 'शोक दिवस' के रूप में मनाया गया। रवींद्रनाथ टैगोर के सुझाव पर इसे 'राखी दिवस' के रूप में भी मनाया गया। इस घटना ने स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को जन्म दिया, जिसने भारतीय राजनीति को उग्र मोड़ दिया।

प्रश्न: 38

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि विपिन चंद्र पाल उग्रवादी विचारधारा के प्रमुख नेता थे और उन्होंने **उदारवादी राजनीति की आलोचना की थी**। उन्होंने स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन का बंगाल में जबरदस्त समर्थन और प्रचार किया। तिलक ने 'केसरी' (मराठी) और 'मराठा' (अंग्रेजी) के माध्यम से जनता को आंदोलित किया। लाला लाजपत राय ने पंजाब में नेतृत्व किया और अरविंद घोष ने वंदे मातरम पत्रिका के माध्यम से निष्क्रिय प्रतिरोध का संदेश दिया। वे स्वराज को अपना 'जन्मसिद्ध अधिकार' मानते थे।

प्रश्न: 39

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 3 असत्य है क्योंकि उग्रवादियों (Extremists) का लक्ष्य केवल प्रशासनिक सुधार नहीं बल्कि **'स्वराज्य'** प्राप्त करना था। वे ब्रिटिश शासन के प्रति किसी वफादारी में विश्वास नहीं रखते थे। तिलक ने गणेश और शिवाजी उत्सवों का उपयोग धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से जनता में राष्ट्रवाद और साहस भरने हेतु किया। उग्रवादियों ने स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा को अपने आंदोलन का मुख्य हथियार बनाया। उन्होंने भारतीय जनता की शक्ति पर विश्वास जताया, न कि ब्रिटिश न्यायप्रियता पर।

प्रश्न: 40

सही उत्तर: B

wincompete

व्याख्या: निष्कर्ष 1 गलत है क्योंकि सूरत विभाजन (1907) के बाद कांग्रेस **उदारवादियों (Moderates) के नियंत्रण में रही**, जबकि उग्रवादियों को कांग्रेस से बाहर कर दिया गया। निष्कर्ष 2 सत्य है; विवाद का मुख्य कारण यह था कि उग्रवादी स्वदेशी आंदोलन को पूरे देश में फैलाना चाहते थे, जबकि उदारवादी इसे केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे। साथ ही, उग्रवादी लाला लाजपत राय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे, जबकि उदारवादियों ने रासबिहारी घोष को अध्यक्ष चुना। इस मतभेद ने कांग्रेस को दो फाड़ कर दिया।

प्रश्न: 41

सही उत्तर: D

व्याख्या: राजा राममोहन राय ने 1809 में अपनी पहली पुस्तक 'तुहफत-उल-मुवाहिद्दीन' फारसी में लिखी, जिसमें उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध और एकेश्वरवाद का समर्थन किया। 1815 में स्थापित 'आत्मीय सभा' बंगाल में बौद्धिक चर्चा का प्रथम आधुनिक मंच थी। 1821 में उन्होंने 'ब्रह्मणिकल मैगजीन' (अंग्रेजी) शुरू की, जिसका उद्देश्य ईसाई मिशनरियों द्वारा हिंदू धर्म पर किये जा रहे प्रहारों का तर्कपूर्ण उत्तर देना और भारतीय संस्कृति की रक्षा करना था। ये तीनों ही उनके बहुमुखी बौद्धिक व्यक्तित्व के परिचायक हैं।

प्रश्न: 42

सही उत्तर: B

व्याख्या: दोनों कथन व्यक्तिगत रूप से सत्य हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है। पाश्चात्य उदारवाद के स्वागत का कारण भारतीयों का आधुनिक मूल्यों (स्वतंत्रता, समानता) के प्रति झुकाव था। राममोहन राय द्वारा ईसाई धर्म के केवल नैतिक पक्ष 'Precepts of Jesus' (1820) को स्वीकार करना उनकी 'तर्कवादी' (Rationalist) प्रवृत्ति का उदाहरण है, न कि उदारवाद के अंधानुकरण के विरोध की व्याख्या। उन्होंने तर्क दिया कि कोई भी धर्म पूर्ण नहीं है और सभी को तर्क की कसौटी पर परखा जाना चाहिए।

प्रश्न: 43

सही उत्तर: A

व्याख्या: हेनरी विवियन डेरोजियो ने 1820 के दशक में 'यंग बंगाल आंदोलन' की शुरुआत की, जो क्रांतिकारी विचारों पर आधारित था। डेविड हेयर ने 1817 में राममोहन राय के सहयोग से कलकत्ता में 'हिंदू कॉलेज' की स्थापना की। आत्मीय सभा (1815) और वेदांत कॉलेज (1825) दोनों की स्थापना राजा राममोहन राय ने की थी। वेदांत कॉलेज का उद्देश्य भारतीय दर्शन और पाश्चात्य विज्ञान का समन्वय करना था। यह सुमेलन 19वीं सदी के बंगाल में शिक्षा के विकास के विभिन्न चरणों को स्पष्ट करता है।

प्रश्न: 44

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि 'प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस' में राजा राममोहन राय ने ईसाई धर्म के चमत्कारिक और अलौकिक पक्ष (Miracles) की आलोचना की थी और केवल इसके नैतिक संदेशों को स्वीकार किया था। इसके कारण वे ईसाई मिशनरियों के निशाने पर भी आए थे। संवाद कौमुदी (1821) ने सती प्रथा के विरुद्ध जनमत तैयार किया, जबकि मिरात-उल-अखबार प्रथम फारसी साप्ताहिक था। डेरोजियो को उनकी राष्ट्रवादी कविताओं के कारण आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।

प्रश्न: 45

wincompete

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन 1 असत्य है क्योंकि 'नील दर्पण' का अंग्रेजी अनुवाद **माइकल मधुसूदन दत्त** ने किया था, न कि बंकिम चंद्र चटर्जी ने। कथन 2 और 3 सत्य हैं। आनंदमठ (1882) सन्यासी विद्रोह की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है, जिसमें 'वंदे मातरम' गीत शामिल है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र का 'भारत दुर्दशा' (1880) हिंदी साहित्य का प्रथम महत्वपूर्ण राजनैतिक नाटक माना जाता है, जिसमें उन्होंने देश की आर्थिक दरिद्रता के लिए विदेशी शासन को जिम्मेदार ठहराया और भारतीयों को जागरूक होने का आह्वान किया।

प्रश्न: 46

सही उत्तर: A

व्याख्या: 19वीं सदी के साहित्य ने अतीत के नायकों (जैसे शिवाजी, महाराणा प्रताप) का चित्रण कर भारतीयों में खोया हुआ गौरव जगाया, अतः निष्कर्ष 1 सत्य है। निष्कर्ष 2 असत्य है क्योंकि इस काल के लेखकों ने धार्मिक विषयों से ऊपर उठकर समकालीन राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं (जैसे अकाल, कर, शोषण) पर खुलकर लिखा। भारतेन्दु, बंकिम चंद्र और विष्णु शास्त्री चिपलूनकर जैसे लेखकों ने साहित्य को 'राष्ट्रीय मुक्ति' का माध्यम बनाया, जिसने आगे चलकर स्वदेशी आंदोलन के लिए वैचारिक आधार तैयार किया।

प्रश्न: 47

सही उत्तर: C

व्याख्या: भारतेन्दु हरिश्चंद्र को 'आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक' माना जाता है। उन्होंने 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगजीन' के माध्यम से हिंदी गद्य को नया रूप दिया। उनका नारा "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" स्वदेशी भाषा और संस्कृति के प्रति उनके प्रेम को दर्शाता है। उनके नाटक 'अंधेर नगरी' और 'भारत दुर्दशा' ने न केवल मनोरंजन किया बल्कि जनता को ब्रिटिश शासन की विसंगतियों और प्रशासनिक भ्रष्टाचार के प्रति सचेत भी किया, जिससे राजनैतिक चेतना का प्रसार हुआ।

प्रश्न: 48

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि 'केसरी' और 'मराठा' समाचार पत्रों का संपादन **बाल गंगाधर तिलक** ने किया था, न कि बंकिम चंद्र चटर्जी ने। 'वंदे मातरम' गीत वास्तव में आनंदमठ का हिस्सा है। 'नील दर्पण' के अनुवादक माइकल मधुसूदन दत्त थे, जिसे पादरी जेम्स लॉन्ग ने प्रकाशित किया था। 'अंधेर नगरी' भारतेन्दु का प्रसिद्ध व्यंग्य नाटक है जो विवेकहीन शासन प्रणाली पर चोट करता है। बंकिम चंद्र ने 'बंगदर्शन' पत्रिका का संपादन किया था जिसने बंगाली साहित्य में क्रांति ला दी थी।

प्रश्न: 49

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन 2 असत्य है क्योंकि लॉर्ड रिपन ने इल्बर्ट बिल के कारण त्यागपत्र नहीं दिया था, बल्कि उन्होंने अपना कार्यकाल पूर्ण होने से पूर्व इस्तीफा दिया था। कथन 1 और 3 सत्य हैं। सी.पी. इल्बर्ट द्वारा पेश इस बिल ने भारतीय जजों को यूरोपीय लोगों के मुकदमे सुनने का अधिकार दिया, जिसका अंग्रेजों ने 'श्वेत विद्रोह' कर विरोध किया। इस नस्लीय भेदभाव ने भारतीयों को यह समझा दिया कि वे संगठित हुए बिना अपने अधिकार नहीं पा सकते, जो 1885 में कांग्रेस की स्थापना का मुख्य आधार बना।

प्रश्न: 50

wincompete

सही उत्तर: A

व्याख्या: सुरेन्द्रनाथ बनर्जी 1883 में जेल जाने वाले पहले भारतीय पत्रकार/नेता बने, अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और व्याख्या सही है। उन्होंने 'द बंगाली' में कलकत्ता हाई कोर्ट के न्यायाधीश जूडिस नॉरिस के एक अपमानजनक फैसले की तुलना 'नादिरशाह' के अत्याचारों से की थी। इस गिरफ्तारी के विरोध में बंगाल और भारत के अन्य हिस्सों में व्यापक प्रदर्शन हुए, जिसने प्रेस की स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों के प्रति भारतीयों को पहली बार बड़े पैमाने पर एकजुट किया।

प्रश्न: 51

सही उत्तर: B

व्याख्या: 1892 का अधिनियम उदारवादियों की जीत थी क्योंकि इसने भारतीयों को पहली बार बजट पर चर्चा का अधिकार दिया, अतः निष्कर्ष 2 सत्य है। निष्कर्ष 1 असत्य है क्योंकि भारतीयों को बजट पर 'मतदान' (Voting) का अधिकार नहीं था, और न ही वे अनुपूरक प्रश्न पूछ सकते थे। यह केवल एक सीमित वैधानिक अधिकार था। फिर भी, इसने ब्रिटिश वित्तीय नीतियों के सार्वजनिक परीक्षण का मार्ग खोल दिया और भविष्य के संवैधानिक सुधारों (1909, 1919) की नींव रखी, जिसने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को गति दी।

प्रश्न: 52

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि इल्बर्ट बिल विवाद **लॉर्ड रिपन** (1880-84) के कार्यकाल की घटना थी, न कि लॉर्ड लिटन की। लॉर्ड लिटन (1876-80) वर्नाकुलर प्रेस एक्ट और शस्त्र अधिनियम जैसे दमनकारी कानूनों के लिए जाने जाते हैं। राजद्रोह कानून 1870 में आईपीसी में धारा 124A के रूप में जोड़ा गया था ताकि राष्ट्रवादी लेखन को दबाया जा सके। चार्ल्स मेटकाफ ने 1835 के अधिनियम द्वारा प्रेस पर लगे प्रतिबंध हटाए थे, इसलिए उन्हें प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।

प्रश्न: 53

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 3 असत्य है क्योंकि 'आई.ए.सी.एस.' (IACS) भारत का प्रथम वैज्ञानिक शोध संस्थान था जो **पूर्णतः भारतीयों के निजी अंशदान** और प्रयासों से स्थापित हुआ था, न कि सरकारी अनुदान पर। डॉ. महेंद्रलाल सरकार चाहते थे कि भारतीय स्वयं के संसाधनों से विज्ञान का विकास करें। रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज (1847) भारत का प्रथम तकनीकी संस्थान था जिसे गंगा नहर के निर्माण हेतु इंजीनियरों की आवश्यकता पूर्ति के लिए बनाया गया था। ये संस्थान भारत में तकनीकी युग के प्रारंभ के साक्षी बने।

प्रश्न: 54

सही उत्तर: B

व्याख्या: दोनों कथन व्यक्तिगत रूप से सत्य हैं लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता। पी.सी. राय को 'जनक' उनके वैज्ञानिक शोध (जैसे मरक्यूरस नाइट्राइट की खोज) और 'ए हिस्ट्री ऑफ हिंदू केमिस्ट्री' पुस्तक के लिए माना जाता है। 'बंगाल केमिकल्स' (1892) की स्थापना उनके 'उद्यमी' पक्ष और स्वदेशी की भावना को दर्शाती है। उन्होंने विज्ञान को केवल प्रयोगशाला तक सीमित न रखकर उसे देश के औद्योगिक उत्थान से जोड़ा, जिसने भारतीय युवाओं को रसायन विज्ञान और उद्यमिता की ओर प्रेरित किया।

प्रश्न: 55

wincompete

सही उत्तर: A

व्याख्या: थॉमसन कॉलेज (रुड़की) 1847 में स्थापित हुआ। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) 1851 में कलकत्ता में बना। आई.ए.सी.एस. (IACS) की स्थापना डॉ. महेंद्रलाल सरकार ने 1876 में की। भारतीय मौसम विभाग (IMD) 1875 में अस्तित्व में आया। ये सभी संस्थान 19वीं सदी के उत्तरार्ध में भारत में 'संस्थागत विज्ञान' के विकास को दर्शाते हैं। GSI और IMD जैसे सरकारी विभागों का उद्देश्य औपनिवेशिक हितों (खनिज और कृषि) की पूर्ति था, जबकि IACS एक राष्ट्रवादी बौद्धिक प्रयास था।

प्रश्न: 56

सही उत्तर: A

व्याख्या: जगदीश चंद्र बोस के शोध ने वैश्विक स्तर पर भारतीय विज्ञान की प्रतिष्ठा स्थापित की, अतः निष्कर्ष 1 सत्य है। निष्कर्ष 2 असत्य है क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने उनके शोध कार्यों को प्रारंभ में नजरअंदाज किया और उन्हें प्रेसीडेंसी कॉलेज में यूरोपीय प्रोफेसरों की तुलना में कम वेतन दिया गया। उन्होंने इस नस्लीय भेदभाव के विरोध में तीन वर्ष तक बिना वेतन के कार्य किया। उनका संघर्ष और उनकी वैज्ञानिक सफलताएं 19वीं सदी के अंत में भारतीय 'वैज्ञानिक राष्ट्रवाद' का सबसे सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

प्रश्न: 57

सही उत्तर: D

व्याख्या: विधवा पुनर्विवाह अधिनियम का इतिहास काफी रोचक है। इसका मसौदा डलहौजी ने तैयार किया था लेकिन यह 26 जुलाई 1856 को लॉर्ड कैनिंग के हस्ताक्षर से पारित हुआ, जिसे 'नियम XV' कहा गया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने 'पराशर स्मृति' जैसे ग्रंथों का हवाला देकर यह सिद्ध किया कि शास्त्रों में विधवा विवाह की अनुमति है। उन्होंने अपने स्वयं के पुत्र का विवाह भी एक विधवा से कर समाज के सामने मिसाल पेश की। यह कानून 19वीं सदी के सामाजिक इतिहास में मानवीय गरिमा की बड़ी जीत थी।

प्रश्न: 58

सही उत्तर: C) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।

कथन (A) (सत्य): ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी **सावित्रीबाई फुले** के साथ मिलकर **1848 में पुणे (भिड़े वाड़ा)** में लड़कियों के लिए भारत का पहला विद्यालय खोला था। उन्होंने समाज के वंचित वर्गों और महिलाओं की शिक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

कारण (R) (असत्य): कारण गलत है क्योंकि ज्योतिबा फुले के संघर्ष का मुख्य केंद्र 'ब्रिटिश वर्चस्व' (British Supremacy) नहीं, बल्कि भारतीय समाज में व्याप्त **'ब्राह्मणवादी वर्चस्व' (Brahminical Hegemony)** और **जाति प्रथा** थी। वे शूद्रों और महिलाओं की शिक्षा को ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध नहीं, बल्कि सामाजिक दासता, मानसिक गुलामी और अंधविश्वास से मुक्ति पाने के लिए अनिवार्य मानते थे।

वास्तव में, फुले ने कई अवसरों पर ब्रिटिश शासन की सराहना की थी क्योंकि उन्हें लगता था कि अंग्रेजों द्वारा लाई गई आधुनिक शिक्षा और कानून की व्यवस्था दलितों और पिछड़ों के लिए न्याय का मार्ग प्रशस्त करेगी।

प्रश्न: 59

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि 'नेटिव मैरिज एक्ट' (1872) का उद्देश्य विधवा पुनर्विवाह को अवैध करना नहीं, बल्कि **बाल विवाह पर रोक लगाना** और अंतरजातीय विवाहों को कानूनी मान्यता देना था। विधवा पुनर्विवाह को 1856 में ही वैध कर दिया गया था। डी.के. कर्वे ने 1916 में जापान की तर्ज पर मुंबई में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की नींव रखी। बी.एम. मालाबारी के प्रयासों से 'एज ऑफ कंसेंट एक्ट' (1891) पारित हुआ जिसने लड़कियों की विवाह आयु 12 वर्ष की। पंडिता रमाबाई ने आर्य महिला समाज के जरिए चेतना जगाई।

प्रश्न: 60

सही उत्तर: C

व्याख्या: यह विवरण धोंडो केशव कर्वे (डी.के. कर्वे) का है। उन्होंने 1893 में स्वयं एक विधवा (आनंदीबाई) से विवाह कर समाज को चुनौती दी। उन्होंने 1899 में पुणे में 'विधवा आश्रम' और 1916 में 'एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की। उनके इन्ही अभूतपूर्व सामाजिक योगदानों के कारण भारत सरकार ने उन्हें उनकी 100वीं वर्षगांठ पर 1958 में सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया। वे 19वीं सदी के उन विरले सुधारकों में थे जिन्होंने सिद्धांत और व्यवहार में कभी अंतर नहीं आने दिया।

प्रश्न: 61

सही उत्तर: D

व्याख्या: राजा राममोहन राय ने 1822 में फारसी भाषा में 'मिरात-उल-अखबार' शुरू किया। बाल गंगाधर तिलक ने 'केसरी' (मराठी) और 'मराठा' (अंग्रेजी) पत्रों का संपादन किया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने 'सोम प्रकाश' (बंगाली साप्ताहिक) शुरू किया, जो वर्नाकुलर प्रेस एक्ट का पहला शिकार बना। एनी बेसेंट ने 'न्यू इंडिया' और 'कॉमनवील' के माध्यम से होम रूल आंदोलन का प्रचार किया। यह सुमेलन 19वीं-20वीं सदी के भारत की वैचारिक पत्रकारिता के प्रमुख स्तंभों को स्पष्ट करता है।

प्रश्न: 62

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि 'द हिंदू' समाचार पत्र के संस्थापक **जी. सुब्रमण्यम अय्यर** (1878) थे, न कि शिशिर कुमार घोष। शिशिर कुमार घोष 'अमृत बाजार पत्रिका' के संस्थापक थे। जे.ए. हिक्की ने भारत का पहला पत्र 'बंगाल गजट' (1780) निकाला। दादाभाई नौरोजी ने 'वॉयस ऑफ इंडिया' के जरिए ब्रिटिश संसद में भारतीय पक्ष रखा। जुगल किशोर शुक्ल ने कानपुर से हिंदी का पहला पत्र 'उदंत मार्तंड' (1826) प्रकाशित किया था।

प्रश्न: 63

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन 3 असत्य है क्योंकि राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्मणिकल मैगजीन' (1821) का प्रकाशन **अंग्रेजी भाषा** में शुरू किया था, फारसी में नहीं (फारसी में मिरात-उल-अखबार था)। 'संवाद कौमुदी' ने सती प्रथा के विरुद्ध जनमत तैयार कर 1829 के कानून की नींव रखी। हरीश चंद्र मुखर्जी के 'हिंदू पैट्रियट' ने 1859-60 के नील विद्रोह में किसानों के साथ खड़े होकर खोजी पत्रकारिता का बेजोड़ उदाहरण पेश किया। यह राष्ट्रवादी प्रेस के आरंभिक संघर्ष को दर्शाता है।

प्रश्न: 64

सही उत्तर: B

wincompete

व्याख्या: यह विवरण 'अमृत बाजार पत्रिका' का है। इसकी स्थापना 1868 में शिशिर कुमार घोष और मोतीलाल घोष ने की थी। जब लॉर्ड लिटन ने केवल भाषाई (Vernacular) पत्रों के दमन हेतु 1878 का अधिनियम पारित किया, तब इस पत्र ने दंडात्मक कार्यवाही से बचने के लिए रातों-रात अपनी भाषा बंगाली से अंग्रेजी कर ली। यह घटना भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में 'चातुर्य और प्रतिरोध' का अद्वितीय उदाहरण मानी जाती है, जिसने ब्रिटिश अधिकारियों को अचंभित कर दिया था।

प्रश्न: 65

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन A सत्य है, लेकिन कारण R पूरी तरह असत्य है। 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' (1878) का उद्देश्य समानता लाना नहीं, बल्कि **नस्लीय भेदभाव** करना था। यह कानून केवल भारतीय भाषाओं के पत्रों पर लागू था, जबकि अंग्रेजी पत्रों को इससे मुक्त रखा गया था। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी नीतियों (जैसे अकाल प्रबंधन) की आलोचना को दबाना था। मजिस्ट्रेट को यह अधिकार दिया गया कि वह प्रकाशक से 'बांड' भरवा ले कि वह सरकार के विरुद्ध कुछ नहीं छापेगा।

प्रश्न: 66

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 2 सत्य है क्योंकि 1823 का लाइसेंसिंग रेगुलेशन (जॉन एडम्स द्वारा) विशेष रूप से उन पत्रों को निशाना बनाने के लिए था जो उदारवादी और राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार कर रहे थे। निष्कर्ष 1 असत्य है क्योंकि इस कानून ने पत्रकारिता को बाधित तो किया, लेकिन 'पूरी तरह समाप्त' नहीं किया। मेटकाफ द्वारा 1835 में इन प्रतिबंधों को हटाए जाने के बाद प्रेस फिर से सक्रिय हुआ। यह स्पष्ट करता है कि दमनकारी कानून विचारों की गति को केवल आंशिक रूप से ही धीमा कर सकते हैं।

प्रश्न: 67

सही उत्तर: B

व्याख्या: चार्ल्स मेटकाफ (1835-36) को 'भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता' कहा जाता है। उन्होंने जॉन एडम्स द्वारा 1823 में लगाए गए कठोर 'लाइसेंसिंग रेगुलेशन' को निरस्त कर दिया और 1835 का 'प्रेस अधिनियम' पारित किया। इसके तहत प्रकाशक को केवल प्रकाशन स्थल की घोषणा करनी होती थी। मेटकाफ का मानना था कि शिक्षित जनता की आवाज को दबाना साम्राज्य के लिए दीर्घकालिक रूप से घातक है। हालांकि, उनके इस उदारवादी कदम के कारण ब्रिटिश सरकार उनसे नाराज हो गई और उन्हें इस्तीफा देना पड़ा।

प्रश्न: 68

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (1878) के तहत पहली दंडात्मक कार्यवाही **'सोम प्रकाश'** (संपादक: विद्यासागर) के विरुद्ध की गई थी, न कि अमृत बाजार पत्रिका के विरुद्ध। 'अमृत बाजार पत्रिका' तो भाषा बदलकर दमन से बच गई थी। यह अधिनियम लिटन की 'प्रतिक्रियावादी नीतियों' का हिस्सा था। लॉर्ड रिपन ने 1882 में इसे निरस्त कर भाषाई और अंग्रेजी प्रेस को फिर से समान अधिकार प्रदान किए, जिसके कारण उन्हें प्रेस का उद्धारक माना गया।

प्रश्न: 69

सही उत्तर: C

wincompete

व्याख्या: कथन A सत्य है, लेकिन कारण R असत्य है। मैकाले का उद्देश्य 'जन-जन तक' शिक्षा पहुँचाना नहीं था, बल्कि **'अधोमुखी निस्यंदन'** (Downward Filtration) के माध्यम से केवल उच्च वर्ग को शिक्षित करना था। वह चाहता था कि उच्च वर्ग से छन-छनकर शिक्षा आम जनता तक पहुँचे। उसका वास्तविक उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो "रक्त और रंग में भारतीय हो, लेकिन रुचि, विचार और बुद्धि में अंग्रेज हो" ताकि ब्रिटिश प्रशासन हेतु वफादार और सस्ते क्लर्क उपलब्ध हो सकें।

प्रश्न: 70

सही उत्तर: A

व्याख्या: 1813 के चार्टर एक्ट ने पहली बार भारतीय शिक्षा के लिए 1 लाख रुपये वार्षिक का फंड दिया। 1835 में मैकाले मिनट ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया। 1854 का वुड डिस्पैच (चार्ल्स वुड) शिक्षा का व्यवस्थित ढांचा लेकर आया। 1882 में हंटर आयोग (लॉर्ड रिपन के समय) ने 1854 के सुधारों की समीक्षा की। यह क्रम भारत में औपनिवेशिक शिक्षा नीति के क्रमिक विकास और प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक के बदलावों को वैज्ञानिक ढंग से सुमेलित करता है।

प्रश्न: 71

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन 2 असत्य है क्योंकि वुड डिस्पैच (1854) ने **प्राथमिक शिक्षा के लिए देशी भाषाओं** (Vernacular) और **उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी** माध्यम की सिफारिश की थी। इसे 'मैग्ना कार्टा' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसने प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा का पूर्ण खाका तैयार किया। इसकी सिफारिश पर ही 1857 में तीन प्रमुख विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई और शिक्षा का भार अब 'अधोमुखी निस्यंदन' के बजाय सरकार ने सीधे अपने कंधों पर लेने की शुरुआत की।

प्रश्न: 72

सही उत्तर: A

व्याख्या: यह प्रसिद्ध कथन लॉर्ड मैकाले का है। उनके 1835 के 'शिक्षा मिनट' ने भारत में प्राच्य-पाश्चात्य विवाद (Orientalist-Anglicist Controversy) को समाप्त कर दिया। उन्होंने भारतीय साहित्य और ज्ञान को अत्यंत निम्न श्रेणी का माना और अंग्रेजी के माध्यम से पश्चिमी विज्ञान और साहित्य को बढ़ावा देने की वकालत की। यद्यपि उनके विचार नस्लीय श्रेष्ठता से भरे थे, लेकिन अनजाने में इसी अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को वैश्विक लोकतांत्रिक विचारों और स्वतंत्रता के सिद्धांतों से भी जोड़ दिया।

प्रश्न: 73

सही उत्तर: D

व्याख्या: 1857 में वुड डिस्पैच की सिफारिशों के आधार पर लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर तीन विश्वविद्यालय स्थापित हुए: कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास। **दिल्ली विश्वविद्यालय** की स्थापना बहुत बाद में (1922) हुई थी। 1857 के ये तीनों विश्वविद्यालय भारत में आधुनिक उच्च शिक्षा के प्रवेश द्वार बने। इन्होंने एक ऐसा शिक्षित मध्यम वर्ग तैयार किया जिसने आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। यह ब्रिटिश नीति का एक अनपेक्षित परिणाम था।

प्रश्न: 74

सही उत्तर: B

wincompete

व्याख्या: विकल्प B असंगत है क्योंकि हंटर आयोग (1882) ने सिफारिश की थी कि **प्राथमिक शिक्षा का माध्यम देशी भाषाएँ (Vernacular)** होनी चाहिए, न कि अंग्रेजी। आयोग का मुख्य बल प्राथमिक शिक्षा के सुधार और प्रसार पर था। इसने सुझाव दिया कि सरकार को प्राथमिक शिक्षा का प्रबंधन जिला और नगर बोर्डों को सौंप देना चाहिए। हंटर आयोग ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधारों की वकालत की और निजी प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए 'ग्रान्ट-इन-एड' (सहायता अनुदान) प्रणाली का समर्थन किया।

प्रश्न: 75

सही उत्तर: A

व्याख्या: कथन और कारण दोनों सत्य हैं और व्याख्या सही है। हंटर आयोग (1882) ने महसूस किया कि सरकार अकेले उच्च शिक्षा का भार नहीं उठा सकती। अतः उसने सिफारिश की कि सरकार को धीरे-धीरे कॉलेज शिक्षा से हट जाना चाहिए और निजी भारतीय संस्थानों को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके फलस्वरूप पंजाब विश्वविद्यालय (1882) और इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1887) जैसे संस्थान बने और डी.ए.वी. कॉलेज व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय जैसे आंदोलनों के माध्यम से शिक्षा का तीव्र विस्तार संभव हुआ।

प्रश्न: 76

सही उत्तर: A

व्याख्या: दोनों निष्कर्ष असत्य हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1887) से पूर्व **पंजाब विश्वविद्यालय (1882)** लाहौर में स्थापित हो चुका था, अतः इलाहाबाद उत्तर भारत का पहला नहीं था। निष्कर्ष 2 भी असत्य है क्योंकि 19वीं सदी के अंत तक शिक्षा ने केवल 'क्लर्क' ही नहीं, बल्कि **राजनैतिक नेतृत्व** और 'बौद्धिक वर्ग' भी तैयार किया। इसी वर्ग ने प्रेस और संगठनों के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। शिक्षा का प्रभाव क्लर्क बनाने के संकुचित उद्देश्य से कहीं अधिक व्यापक और राष्ट्रवादी रहा।

प्रश्न: 77

सही उत्तर: D

व्याख्या: तीनों कथन सत्य हैं। पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीयों को रूसो, मिल और स्पेंसर के विचारों से जोड़ा। प्रेस ने 'धन का निष्कासन' (Drain of Wealth) जैसे कठिन सिद्धांतों को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाया, जिससे आर्थिक राष्ट्रवाद को बल मिला। 19वीं सदी में प्रेस वास्तव में एक 'विपक्षी दल' की भूमिका निभा रहा था, जो सरकारी बजट, करों और प्रशासनिक गलतियों का पर्दाफाश करता था। शिक्षा ने 'विचार' दिए और प्रेस ने उन विचारों को 'पैर' दिए ताकि वे ग्रामीण इलाकों तक पहुँच सकें।

प्रश्न: 78

सही उत्तर: C

व्याख्या: सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने 'द बंगाली' (1879) के माध्यम से नागरिक अधिकारों की लड़ाई लड़ी। बाल गंगाधर तिलक ने 'मराठा' (अंग्रेजी) और 'केसरी' (मराठी) का संपादन किया। जी. सुब्रमण्यम अय्यर ने दक्षिण भारत में 'द हिंदू' और 'स्वदेशमित्रन' के जरिए राष्ट्रवाद फैलाया। गोपाल कृष्ण गोखले ने 'सुधारक' पत्रिका के जरिए समाज और राजनीति में सुधारों की वकालत की। ये नेता-पत्रकार जोड़ी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के वैचारिक धरातल के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी थी।

प्रश्न: 79

सही उत्तर: A

wincompete

व्याख्या: निष्कर्ष 1 सत्य है क्योंकि प्रेस द्वारा किए गए प्रशासनिक पर्दाफाश ने यह सिद्ध किया कि ब्रिटिश शासन भारतीयों के कल्याण हेतु नहीं, बल्कि दोहन हेतु है। इससे 'मैकाले का वफादार भारतीय' बनने का सपना टूट गया। निष्कर्ष 2 असत्य है क्योंकि सरकार ने प्रेस को 'पूरी तरह प्रतिबंधित' नहीं किया, बल्कि **नियंत्रित** (Censorship) करने का प्रयास किया। जब भी सरकार ने दमन किया (जैसे 1878 या 1908), राष्ट्रवाद और अधिक उग्र हुआ। प्रेस की स्वतंत्रता पर हमले ने ही 'अभिव्यक्ति के अधिकार' को एक बड़ा राजनैतिक मुद्दा बना दिया।

प्रश्न: 80

सही उत्तर: D

व्याख्या: विकल्प A और B दोनों सत्य हैं। तिलक ने 1896-97 के दौरान 'केसरी' में लेख लिखकर महाराष्ट्र के किसानों को कर न देने के लिए संगठित किया। प्रेस का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि इसने मद्रास, बंगाल और बॉम्बे के शिक्षित वर्ग को एक ही भाषा और मुद्दों से जोड़ दिया। इसने क्षेत्रीय संकीर्णता को समाप्त कर 'अखिल भारतीय चेतना' के निर्माण में पुल का कार्य किया। यद्यपि शिक्षित वर्ग ने इसका नेतृत्व किया, लेकिन प्रेस के माध्यम से यह चेतना धीरे-धीरे सामान्य जनमानस का हिस्सा बनती गई।

प्रश्न: 81

सही उत्तर: A

व्याख्या: राजा राममोहन राय ने 1815 में 'आत्मीय सभा' की स्थापना की थी। उन्होंने 1820 में 'प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस' में ईसाई धर्म की नैतिकता का समर्थन किया लेकिन चमत्कारों का विरोध किया। कथन 3 असत्य है क्योंकि उन्होंने 'ब्रह्म सभा' की स्थापना 20 अगस्त **1828** को की थी, न कि 1829 को। 1829 का वर्ष सती प्रथा उन्मूलन के कानून के लिए प्रसिद्ध है। तिथियों में महीनों और वर्षों का बारीक अंतर RPSC में अक्सर पूछा जाता है।

प्रश्न: 82

सही उत्तर: B

व्याख्या: दोनों कथन व्यक्तिगत रूप से सत्य हैं। बेंटिक ने 4 दिसंबर 1829 को नियम XVII (17) द्वारा सती प्रथा अवैध की। राजा राममोहन राय ने 'संवाद कौमुदी' के जरिए इसके विरुद्ध जनमत तैयार किया था। हालांकि, कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है क्योंकि बेंटिक का निर्णय प्रशासनिक सुधार था और सती प्रथा की धार्मिक व्याख्या राममोहन राय की अपनी वैचारिक जीत थी। यह 'तार्किक जाल' अभ्यर्थी की विश्लेषणात्मक शक्ति की जाँच करता है।

प्रश्न: 83

सही उत्तर: C

व्याख्या: 1866 में ब्रह्म समाज का पहला बड़ा विभाजन हुआ। केशव चंद्र सेन अधिक प्रगतिशील थे और उन्होंने अंतरराष्ट्रीय धर्मों की शिक्षाओं को जोड़ा, जिससे रूढ़िवादी देवेंद्रनाथ टैगोर से उनका मतभेद हुआ। टैगोर का गुट 'आदि ब्रह्म समाज' कहलाया जिसने हिंदू परंपराओं को वरीयता दी। निष्कर्ष 2 भी सत्य है क्योंकि टैगोर ने इसके बाद समाज को पूरी तरह आध्यात्मिक और सामाजिक सुधारों तक सीमित कर दिया और सक्रिय राजनीति से दूरी बना ली।

प्रश्न: 84

सही उत्तर: D

wincompete

व्याख्या: विकल्प D असंगत है क्योंकि राजा राममोहन राय का देहांत 1833 में ब्रिस्टल (इंग्लैंड) में हुआ था, लेकिन ब्रह्म समाज का मुख्यालय कभी ब्रिस्टल नहीं रहा। मुख्यालय हमेशा कलकत्ता ही रहा। 'तुहफत-उल-मुवाहिद्दीन' (1809) उनकी पहली महत्वपूर्ण फारसी कृति थी। उन्हें 'राजा' की उपाधि अकबर द्वितीय ने दी थी। मिरात-उल-अखबार पत्रकारिता में उनके अग्रणी होने का प्रमाण है। ब्रिस्टल में उनकी समाधि आज भी स्थित है जो एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य है।

प्रश्न: 85

सही उत्तर: B

व्याख्या: कथन 3 असत्य है क्योंकि स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना मूलतः **हिंदी (आर्य भाषा)** में की थी, न कि संस्कृत में। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने पर बल दिया था। उनका मूल नाम मूल शंकर था और गुरु विरजानंद ने उन्हें वेदों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। 1875 में बॉम्बे में स्थापना के बाद 1877 में मुख्यालय लाहौर स्थानांतरित किया गया था, जो आर्य समाज के उत्तर भारत में प्रसार का बड़ा कारण बना।

प्रश्न: 86

सही उत्तर: C

व्याख्या: कथन A सत्य है, लेकिन कारण R पूरी तरह असत्य है। वास्तविकता इसके विपरीत थी: **स्वामी श्रद्धानंद, लेखराम और मुंशीराम** ने 'गुरुकुल प्रणाली' का समर्थन किया (गुरुकुल कांगड़ी), जबकि **लाला हंसराज और लाला लाजपत राय** पाश्चात्य शिक्षा के पक्षधर थे, जिन्होंने लाहौर में D.A.V. (दयानंद एंग्लो-वैदिक) कॉलेज की स्थापना की। यह 'तथ्यात्मक जाल' नामों को आपस में बदलकर परीक्षार्थियों को भ्रमित करने के लिए बनाया गया है।

प्रश्न: 87

सही उत्तर: A

व्याख्या: स्वामी दयानंद का राजस्थान संबंध गहरा है। वे 1865 में सर्वप्रथम करौली रियासत आए थे। उदयपुर में उन्होंने 1883 में परोपकारिणी सभा बनाई और 'सत्यार्थ प्रकाश' के लेखन को पूर्ण किया। अजमेर उनका निर्वाण स्थल रहा जहाँ 30 अक्टूबर 1883 (दीपावली) को उन्होंने अंतिम सांस ली। जोधपुर प्रवास के दौरान महाराजा जसवंत सिंह के दरबार में उन्हें 'नन्ही जान' द्वारा विष दिए जाने की दुखद घटना हुई थी। यह सुमेलन राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अनिवार्य है।

प्रश्न: 88

सही उत्तर: D

व्याख्या: यह विवरण 'परोपकारिणी सभा' का है। इसकी स्थापना स्वामी दयानंद ने फरवरी 1883 में उदयपुर में की थी। महाराणा सज्जन सिंह इसके प्रथम अध्यक्ष थे। इसका उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार और स्वामी जी की कृतियों का प्रकाशन था। बाद में इसका कार्यालय अजमेर स्थानांतरित कर दिया गया था। राजस्थान में आर्य समाज की गतिविधियों का यह मुख्य केंद्र था। अन्य विकल्प जैसे 'देश हितेषिणी सभा' सामाजिक कुरीतियों (खर्चों) पर नियंत्रण हेतु थी।

प्रश्न: 89

सही उत्तर: B

wincompete

व्याख्या: कथन 2 असत्य है क्योंकि स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में 'शून्यवाद' पर नहीं, बल्कि **हिंदू धर्म/वेदांत** की महानता पर भाषण दिया था। 'अमेरिका के भाइयों और बहनों' वाले उनके संबोधन ने पश्चिमी जगत को चकित कर दिया था। उनका मूल नाम नरेंद्र नाथ दत्त था। खेतड़ी (झुंझुनू) के राजा अजीत सिंह ने उन्हें शिकागो जाने के लिए आर्थिक मदद दी और उन्हीं के सुझाव पर नरेंद्र नाथ ने 'विवेकानंद' नाम धारण किया और केसरिया साफा पहनना शुरू किया।

प्रश्न: 90

सही उत्तर: A

व्याख्या: निष्कर्ष 2 सत्य है; सुभाष चंद्र बोस ने विवेकानंद के राष्ट्रवाद से प्रभावित होकर उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता कहा था। निष्कर्ष 1 असत्य है क्योंकि विवेकानंद ने कभी राजनैतिक स्वतंत्रता की उपेक्षा नहीं की, लेकिन उनका मानना था कि आत्म-सम्मान और सांस्कृतिक गौरव ही भविष्य की राजनैतिक मुक्ति का आधार बनेगा। उन्होंने 'जीव ही शिव है' के माध्यम से मानवता की सेवा को ही धर्म का सर्वोच्च अंग बताया, जिसने राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया।

प्रश्न: 91

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि 'सिस्टर निवेदिता' (मार्ग्रेट नोबल) विवेकानंद की शिष्या तो थीं, लेकिन उनका मूल नाम मार्ग्रेट एलिजाबेथ नोबल था और उन्होंने भारत में विशेषकर बंगाल क्रांतिकारी आंदोलन में बड़ी भूमिका निभाई। राजयोग, कर्मयोग और ज्ञानयोग विवेकानंद की दार्शनिक रचनाएँ हैं। न्यूयॉर्क हेराल्ड ने उनके शिकागो भाषण के बाद लिखा था कि भारत जैसे विद्वान राष्ट्र में ईसाई मिशनरियों को भेजना मूर्खता है। बेलूर मठ रामकृष्ण मिशन का वैश्विक मुख्यालय है।

प्रश्न: 92

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B सत्य है क्योंकि विवेकानंद अपनी शिकागो यात्रा (1893) से पहले भी खेतड़ी आए थे और लौटकर भी आए थे। खेतड़ी नरेश अजीत सिंह न केवल उनके शिष्य थे बल्कि घनिष्ठ मित्र भी थे। उन्होंने ही विवेकानंद के लिए शिकागो का टिकट और वस्त्रों का प्रबंध किया था। विवेकानंद ने कहा था कि यदि खेतड़ी नरेश नहीं होते तो मैं शिकागो नहीं जा पाता। यह तथ्य राजस्थान के गौरव और विवेकानंद के राजस्थान प्रेम को रेखांकित करता है।

प्रश्न: 93

सही उत्तर: D

व्याख्या: कथन A सत्य है, लेकिन कारण R पूर्णतः असत्य है। सर सैय्यद अहमद खान ने कांग्रेस का **पुरजोर विरोध** किया था। उनका मानना था कि कांग्रेस केवल हिंदुओं का संगठन है और मुसलमानों का हित ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार रहने और आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने में है। उन्होंने 'यूनाइटेड इंडियन पैट्रियटिक एसोसिएशन' बनाई ताकि कांग्रेस के प्रभाव को कम किया जा सके। वे मुस्लिम समुदाय को राजनैतिक आंदोलनों से दूर रखकर केवल शिक्षा पर केंद्रित करना चाहते थे।

प्रश्न: 94

सही उत्तर: C

wincompete

व्याख्या: प्रार्थना समाज (1867) की स्थापना आत्माराम पांडुरंग ने बॉम्बे में की। थियोसोफिकल सोसाइटी का अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय 1882 में मद्यार (मद्रास) में बना। साइंटिफिक सोसाइटी की स्थापना सर सैय्यद अहमद खान ने मुस्लिम समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु की थी। सत्यशोधक समाज (1873) ज्योतिबा फुले द्वारा पुणे में निम्न जातियों के उत्थान के लिए बनाया गया था। यह सुमेलन 19वीं सदी के चार अलग-अलग वैचारिक धाराओं को जोड़ता है।

प्रश्न: 95

सही उत्तर: A

व्याख्या: यह विवरण एनी बेसेंट का है। वे आयरिश महिला थीं जो 1893 में भारत आईं। उन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी के माध्यम से हिंदू धर्म का पुनरुत्थान किया। 1898 में वाराणसी में स्थापित 'सेंट्रल हिंदू कॉलेज' आगे चलकर मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से BHU बना। 1917 में वे कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। मार्ग्रेट नोबल (सिस्टर निवेदिता) आयरिश तो थीं लेकिन वे रामकृष्ण मिशन से जुड़ी थीं। बेसेंट ने 'होम रूल लीग' आंदोलन भी चलाया था।

प्रश्न: 96

सही उत्तर: B

व्याख्या: विकल्प B सत्य है क्योंकि प्रार्थना समाज ने हिंदू धर्म के भीतर रहकर सुधारों की वकालत की। इसने अंतरजातीय विवाह, विधवा विवाह और महिला शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया, विरोध नहीं। एम.जी. रानाडे (जिन्हें पश्चिम भारत का सुकरात कहते हैं) के जुड़ने के बाद यह महाराष्ट्र में सुधारों की मुख्य धारा बनी। यह संस्था एकेश्वरवाद में विश्वास करती थी और मूर्तिपूजा व पुरोहितवाद का विरोध करती थी। रानाडे ने विधवा विवाह संघ की भी स्थापना की थी।

प्रश्न: 97

सही उत्तर: D

व्याख्या: निष्कर्ष 1 सत्य है। ज्योतिबा फुले ने 'गुलामगिरी' के माध्यम से भारतीय दलितों के शोषण की तुलना अमेरिकी गृहयुद्ध में अश्वेत दासों की गुलामी से की थी। यह उनकी वैश्विक दृष्टि का परिचायक था। निष्कर्ष 2 असत्य है क्योंकि ज्योतिबा फुले को 'महात्मा' की उपाधि ब्रिटिश सरकार ने नहीं, बल्कि **1888 में बॉम्बे की एक विशाल जनसभा में जनता द्वारा** प्रदान की गई थी। वे भारतीय समाज के प्रथम वास्तविक 'लोक-शिक्षक' और दलित मसीहा माने जाते हैं।

प्रश्न: 98

सही उत्तर: C

व्याख्या: विकल्प C असंगत है क्योंकि डॉ. बी.आर. अंबेडकर, ज्योतिबा फुले को अपना **तीसरा गुरु** (बुद्ध और कबीर के बाद) मानते थे। फुले के कार्यों ने ही अंबेडकर के लिए दलित आंदोलन की वैचारिक नींव रखी थी। सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका थीं। सत्यशोधक समाज ने ब्राह्मणों के बिना विवाह संपन्न कराकर धार्मिक शोषण को चुनौती दी। 'सार्वजनिक सत्य धर्म' फुले की मृत्यु के बाद प्रकाशित उनकी अंतिम रचना है जो उनके मानवतावादी दर्शन को समेटे हुए है।

प्रश्न: 99

सही उत्तर: A

wincompete

व्याख्या: यह विवरण ज्योतिबा फुले का है। यद्यपि सावित्रीबाई फुले उनकी पत्नी और प्रथम शिक्षिका थीं, लेकिन विद्यालय खोलने और 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' (विधवाओं के बच्चों हेतु) की योजना ज्योतिबा फुले की थी। उन्होंने 'शूद्र' और 'अति-शूद्र' शब्द का प्रयोग किया और शिक्षा को ही एकमात्र मुक्ति का मार्ग बताया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने बंगाल में विधवा विवाह पर कार्य किया, जबकि फुले का केंद्र पुणे (महाराष्ट्र) था और उनका लक्ष्य संपूर्ण जाति व्यवस्था का उन्मूलन था।

प्रश्न: 100

सही उत्तर: B

व्याख्या: 19वीं शताब्दी के इन आंदोलनों का सबसे बड़ा निष्कर्ष यह है कि इन्होंने मानवतावाद, तर्कशीलता और व्यक्ति की गरिमा के आधार पर आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का वैचारिक धरातल तैयार किया। यद्यपि ये आंदोलन मुख्य रूप से शहरी और शिक्षित वर्ग तक सीमित रहे (कथन A गलत) और सांप्रदायिकता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई (कथन D गलत), लेकिन इन्होंने अंग्रेजों के 'सभ्य बनाने' के दावे को चुनौती दी और भारतीयों में आत्म-सम्मान जगाया, जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम का आधार बना।

wincompete